दोस्त

अकरम गासेमपोर

कला: नसीम आज़ादी

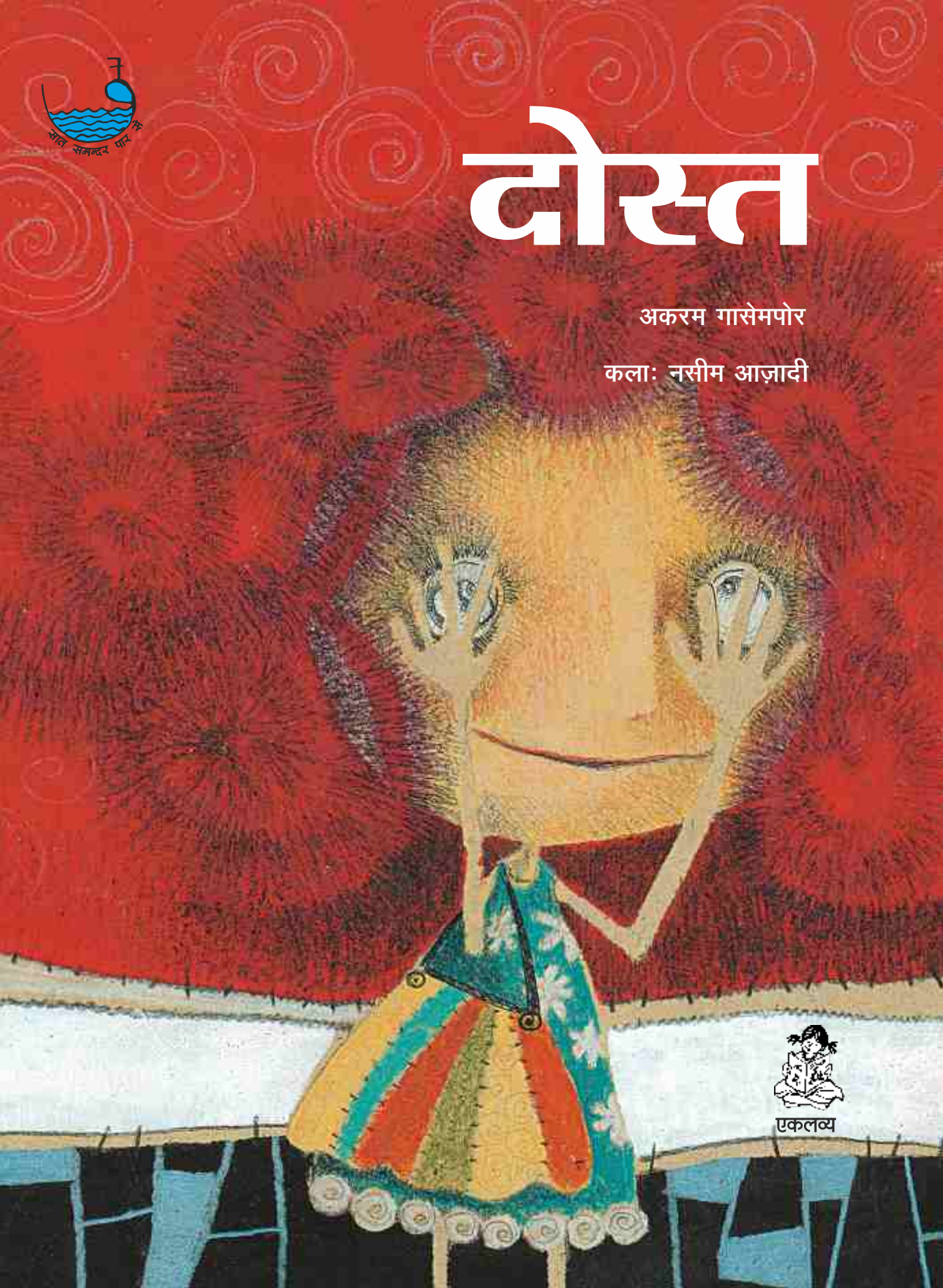

एकलव्य

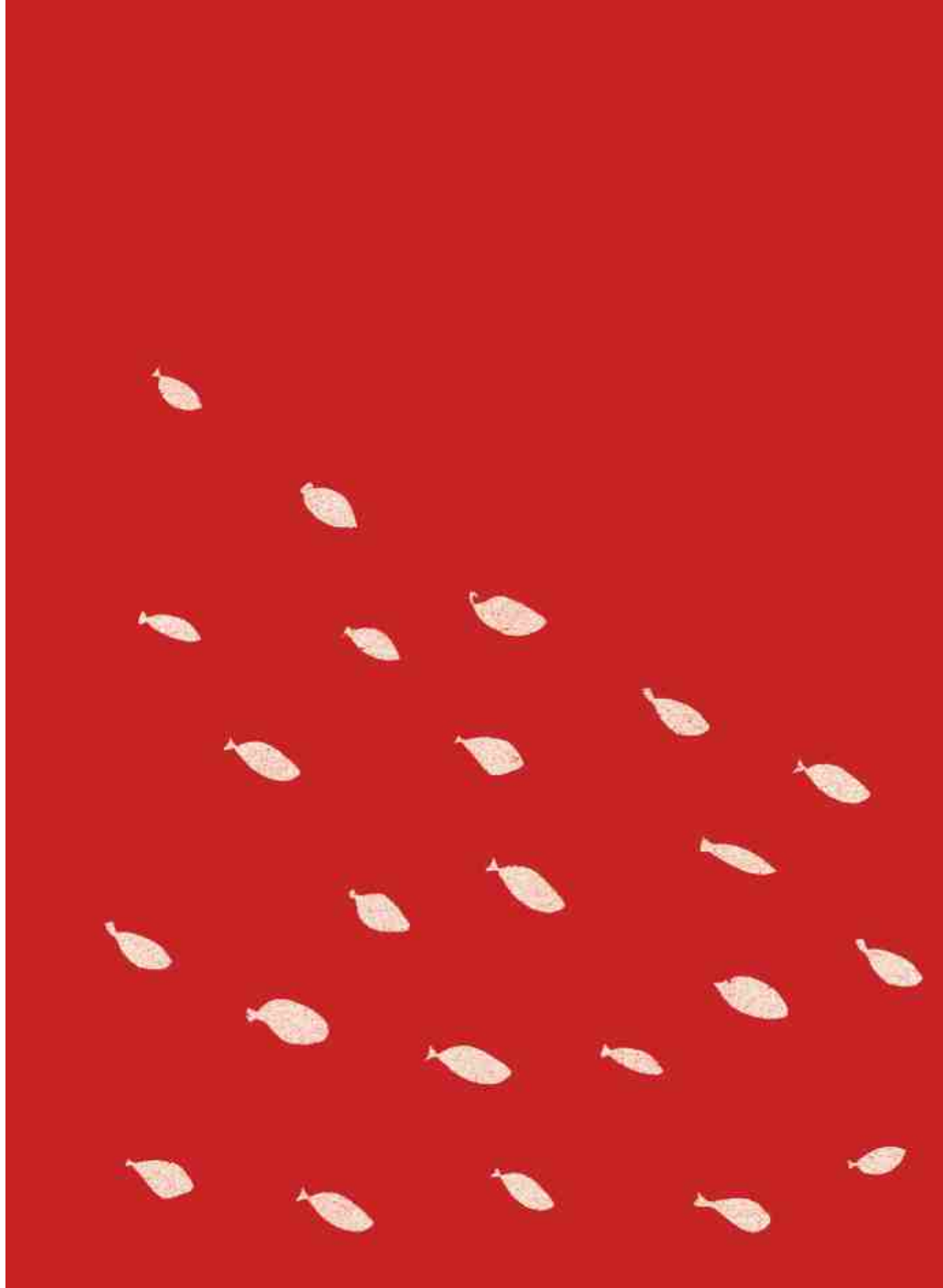

दोस्त

अकरम गासेमपोर

कला:
नसीम आज़ादी

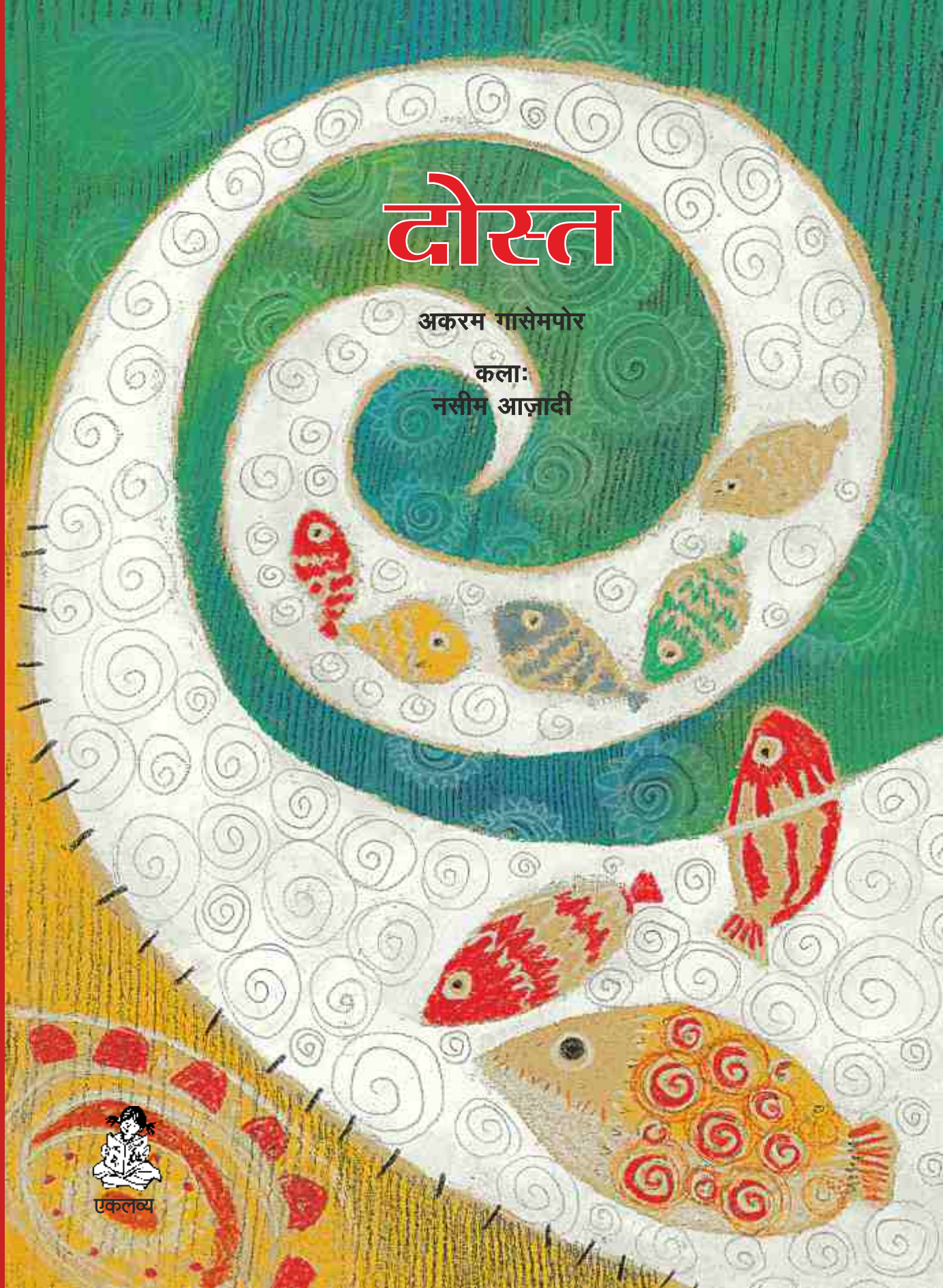

एकलव्य

दोस्त

DOST

कहानी: अकरम गासेमपोर

कला: नसीम आज़ादी

अँग्रेज़ी से अनुवाद: सीमा

Originally in Persian Published by Shabaviz
© Shabaviz, Tehran, Iran
© हिन्दी अनुवाद: एकलव्य (2016)

जनवरी 2016/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-85236-00-6
मूल्य: ₹ 60.00
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है
(ISBN: 978-93-81337-79-0 / मूल्य: ₹ 80.00)

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोन: +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोन: +91 755 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ जंगल-मुक्त नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

पहली बार जब मैंने उसे देखा तो वह एकटक समन्दर को देख रही थी।

"क्या तुम मेरे साथ खेलोगी?" मैंने पूछा।

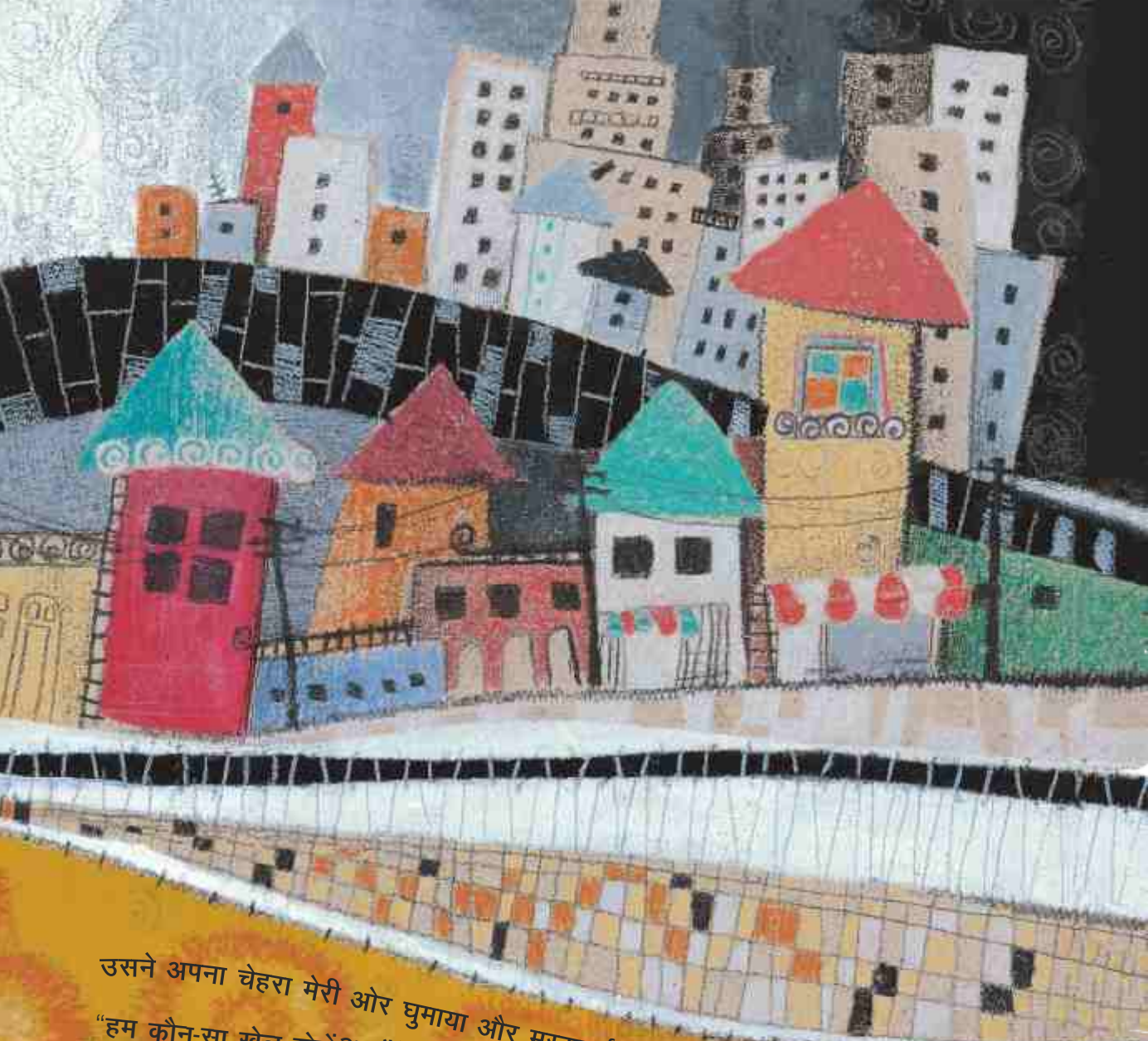

उसने अपना चेहरा मेरी ओर घुमाया और मुस्कराई। ज़ाहिर है वह राज़ी थी।

"हम कौन-सा खेल खेलें?" मैंने पूछा।

वह कुछ नहीं बोली। पर मैं खेल जल्दी शुरू करना चाहती थी।

"क्या तुम्हें लुकाछुपी खेलना पसन्द है?" मैंने पूछा। "तो फिर अपनी आँखें बन्द करो।"

उसने हामी तो भरी लेकिन अपनी आँखें बन्द नहीं कीं।

"देखो, चालाकी नहीं," मैंने कहा।

वह हँस दी।

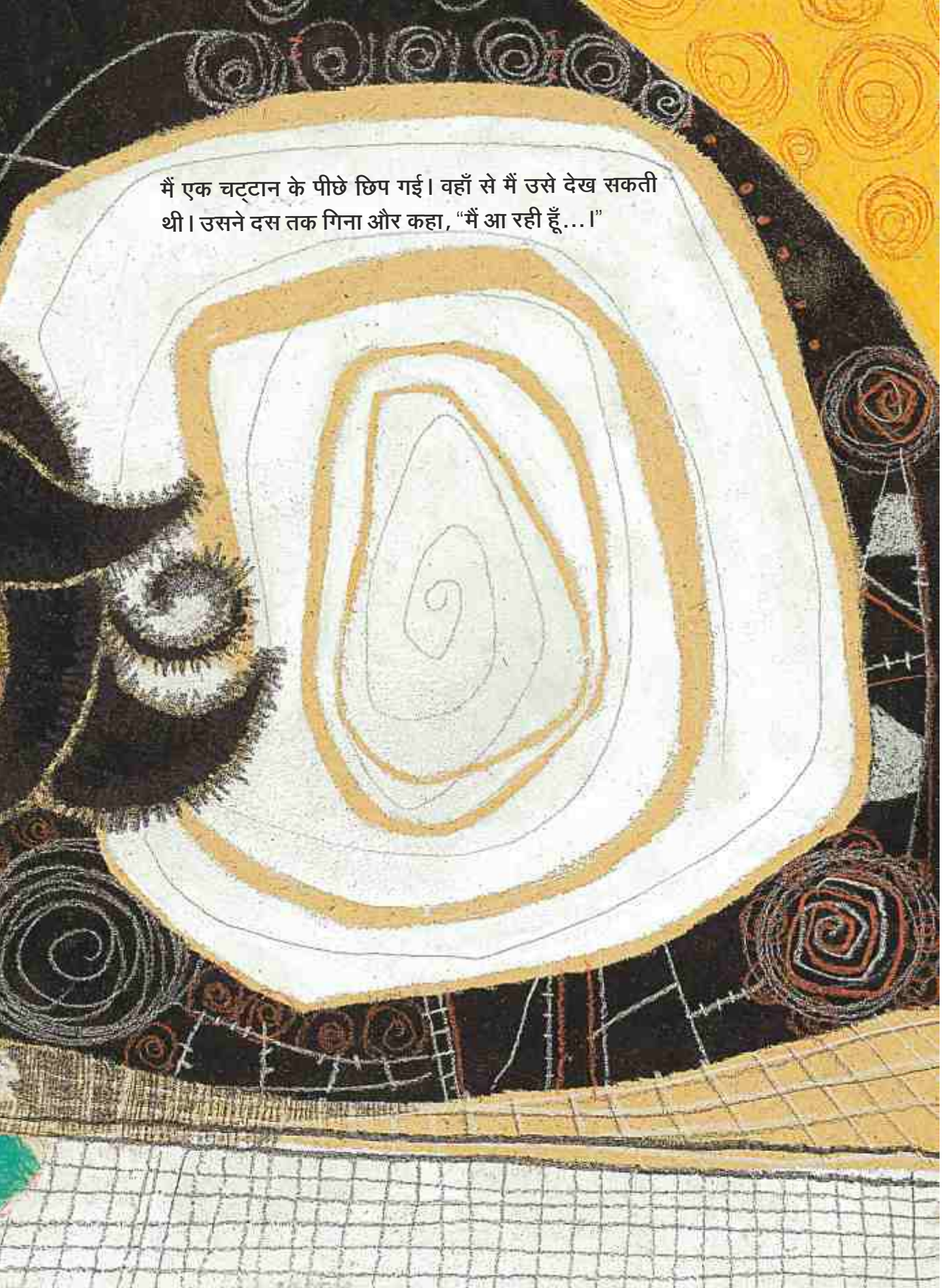

मैं एक चट्टान के पीछे छिप गई। वहाँ से मैं उसे देख सकती थी। उसने दस तक गिना और कहा, "मैं आ रही हूँ...।"

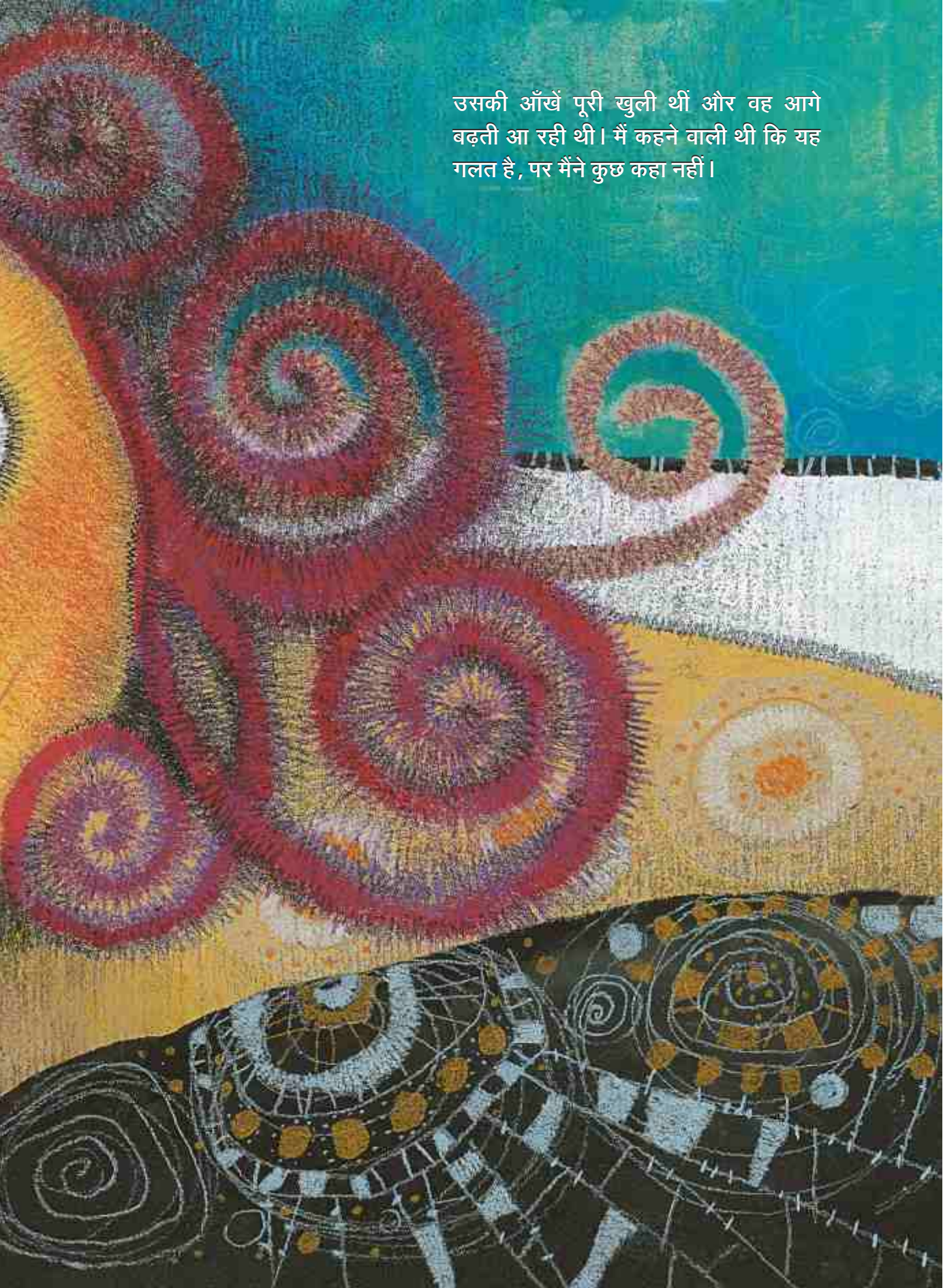

उसकी आँखें पूरी खुली थीं और वह आगे बढ़ती आ रही थी। मैं कहने वाली थी कि यह गलत है, पर मैंने कुछ कहा नहीं।

उसने अपने हाथ अपने सामने ऐसे फैला रखे थे मानो वह उनसे अपना रास्ता ढूँढ रही हो।

वह धीरे-धीरे, बहुत चौकस मेरी ओर बढ़ती आ रही थी। मेरे सामने आकर वह रुक गई। ऐसा लगा मानो वह कोई आवाज़ सुन रही थी। उसने उस चट्टान की ओर इशारा किया जिसके पीछे मैं छिपी थी, और कहा, "क्या तुम वहाँ हो?"

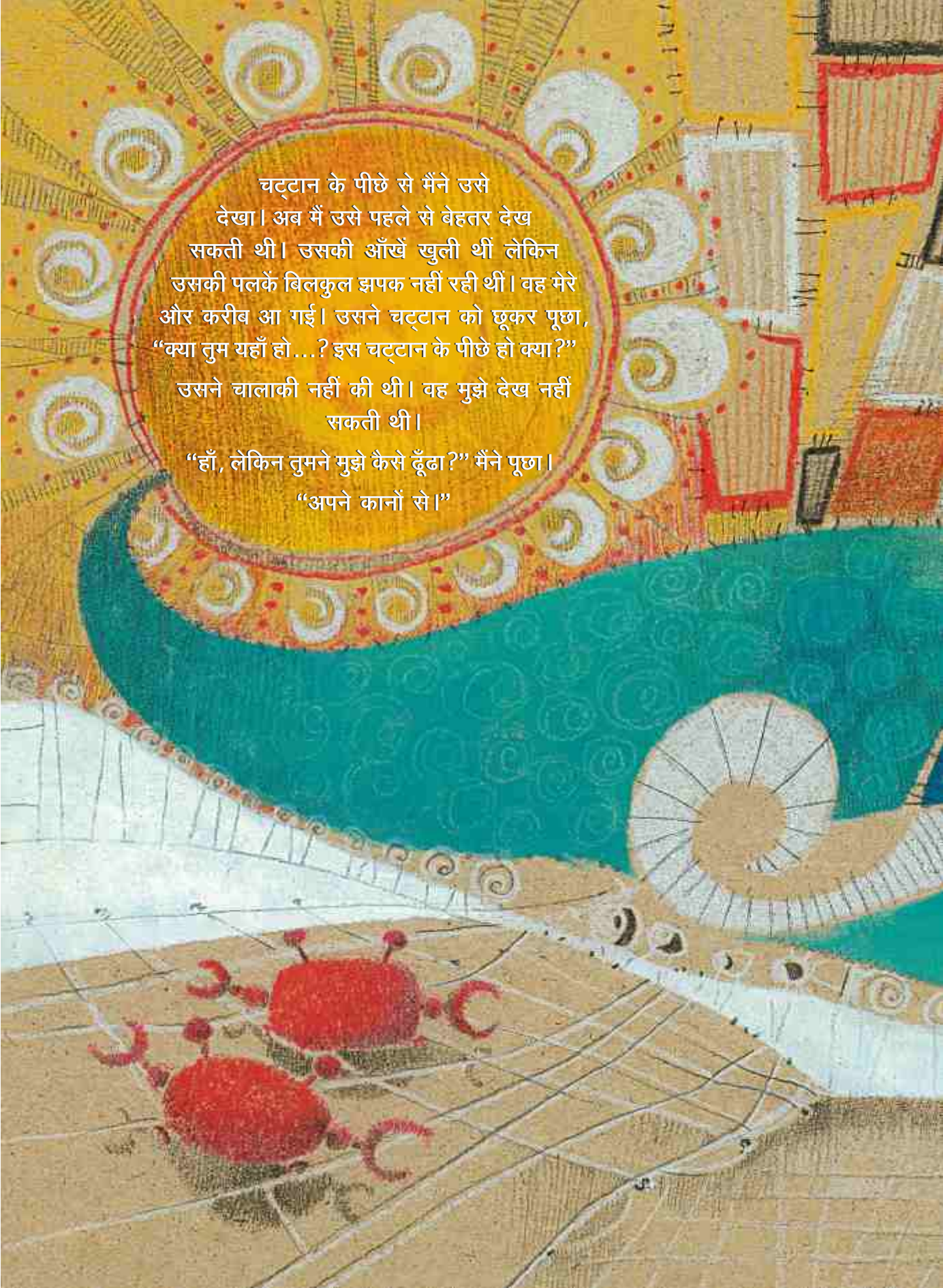

चट्टान के पीछे से मैंने उसे देखा। अब मैं उसे पहले से बेहतर देख सकती थी। उसकी आँखें खुली थीं लेकिन उसकी पलकें बिलकुल झपक नहीं रही थीं। वह मेरे और करीब आ गई। उसने चट्टान को छूकर पूछा, "क्या तुम यहाँ हो...? इस चट्टान के पीछे हो क्या?"

उसने चालाकी नहीं की थी। वह मुझे देख नहीं सकती थी।

"हाँ, लेकिन तुमने मुझे कैसे ढूँढा?" मैंने पूछा।

"अपने कानों से।"

अब मैं उसके साथ और लुकाछुपी नहीं खेलना चाहती थी।

"क्या तुम कोई और खेल खेलना चाहोगी?" मैंने पूछा।

"मुझे रेत पर चित्र बनाना अच्छा लगता है," उसने जवाब दिया।

फिर उसने अपना चेहरा समन्दर की ओर किया और गहरी साँस ली, जैसे समन्दर को सूँघ रही हो।

"सूरज हमारे दाहिनी ओर है, है ना?" उसने मुझसे पूछा।

"हाँ," मैंने कहा।

मुझे नहीं मालूम उसने यह सवाल क्यों पूछा।

उसने अपने जूते उतारे और फिर मेरे चारों ओर एक गोला बनाया।

"क्या तुमने गोला बनाया है?" मैंने पूछा।

"नहीं," उसने कहा, "मैंने सूरज बनाया है।"

हम रेत पर उकेरे गए सूरज के अन्दर बैठ गए। वह अभी भी हौले-हौले रेत से खेल रही थी। मैं जानना चाहती थी कि वह अब क्या बना रही है।

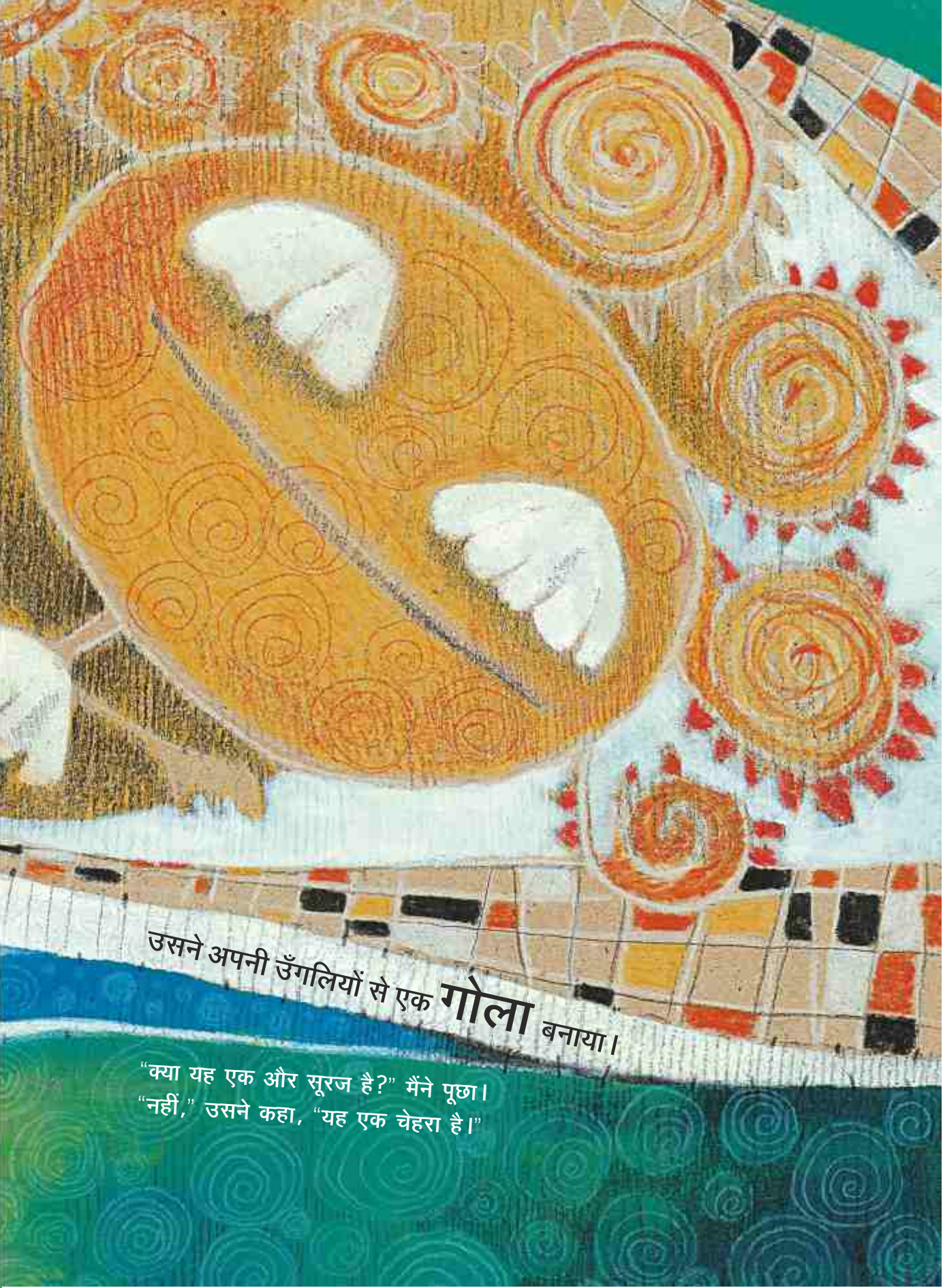

उसने अपनी उँगलियों से एक **गोला** बनाया।

"क्या यह एक और सूरज है?" मैंने पूछा।
"नहीं," उसने कहा, "यह एक चेहरा है।"

उसने एक लड़की का
चेहरा बनाया जिसकी दो लम्बी
सपाट भौंहें, एक छोटी-सी नाक और होंठों
पर एक चौड़ी मुस्कान थी। उसने आँखों की
जगह दो सीपें रख दीं। उसने एक उदार चेहरा
बनाया था, उसी के जैसा उदार।

उसने अपना सिर ऊपर उठाया और हल्के-से
अपने हाथ मेरे चेहरे पर रख दिए। उसने मेरी
नाक, मेरे होंठ और मेरे बालों को छुआ।
वह अपने हाथों से यह समझने की
कोशिश कर रही थी कि मैं
कैसी दिखती हूँ।

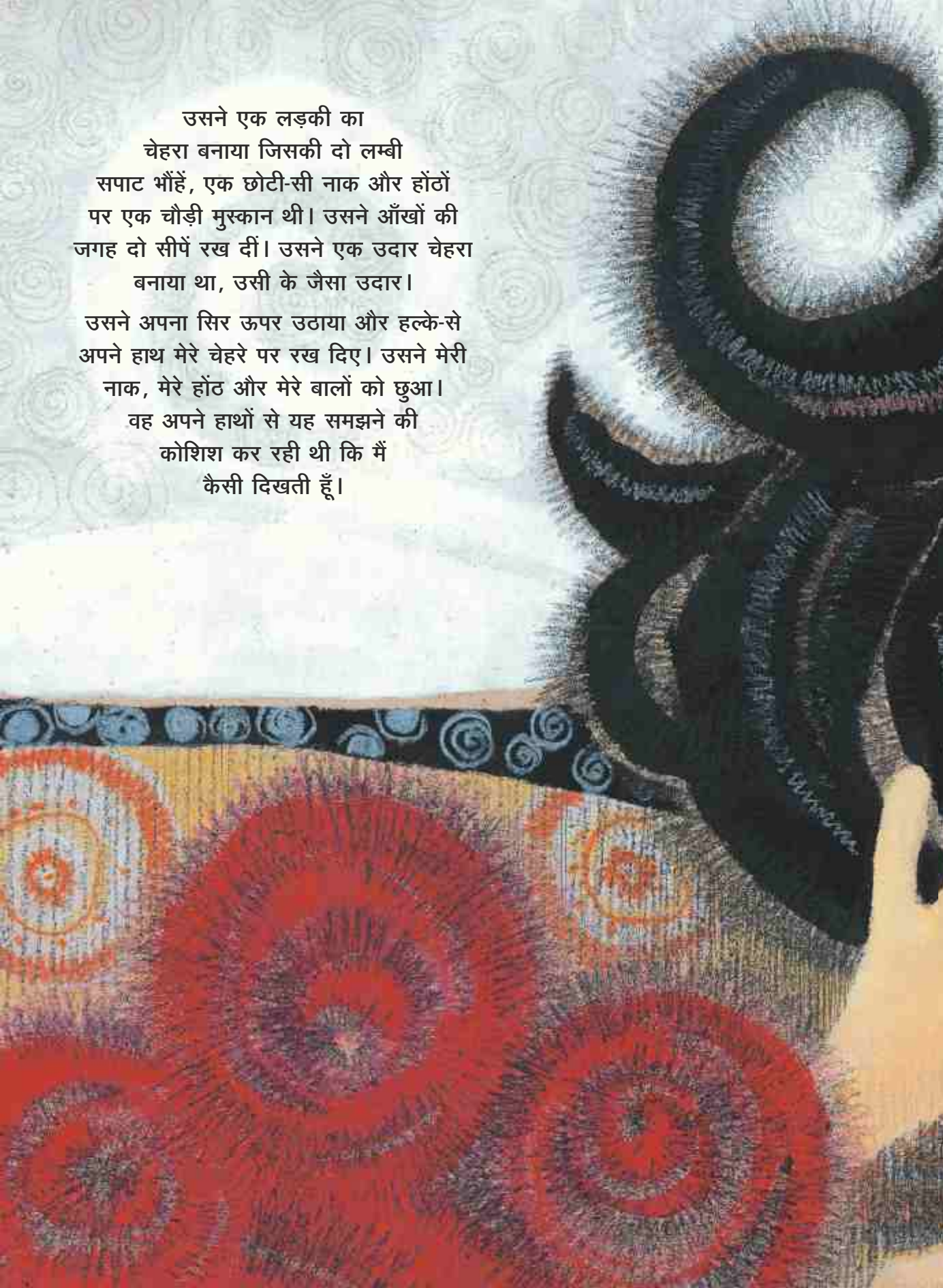

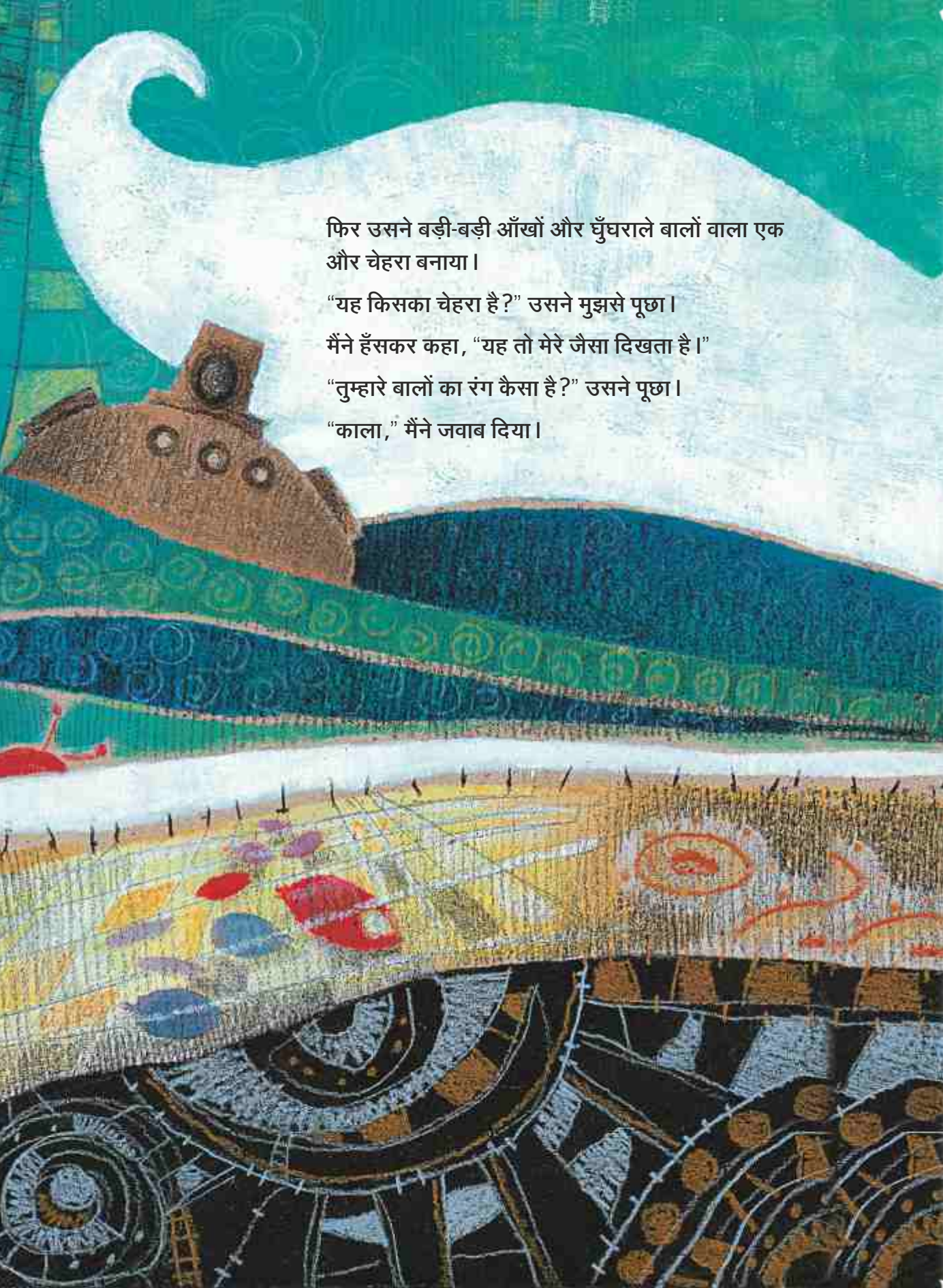

फिर उसने बड़ी-बड़ी आँखों और घुँघराले बालों वाला एक और चेहरा बनाया।

"यह किसका चेहरा है?" उसने मुझसे पूछा।

मैंने हँसकर कहा, "यह तो मेरे जैसा दिखता है।"

"तुम्हारे बालों का रंग कैसा है?" उसने पूछा।

"काला," मैंने जवाब दिया।

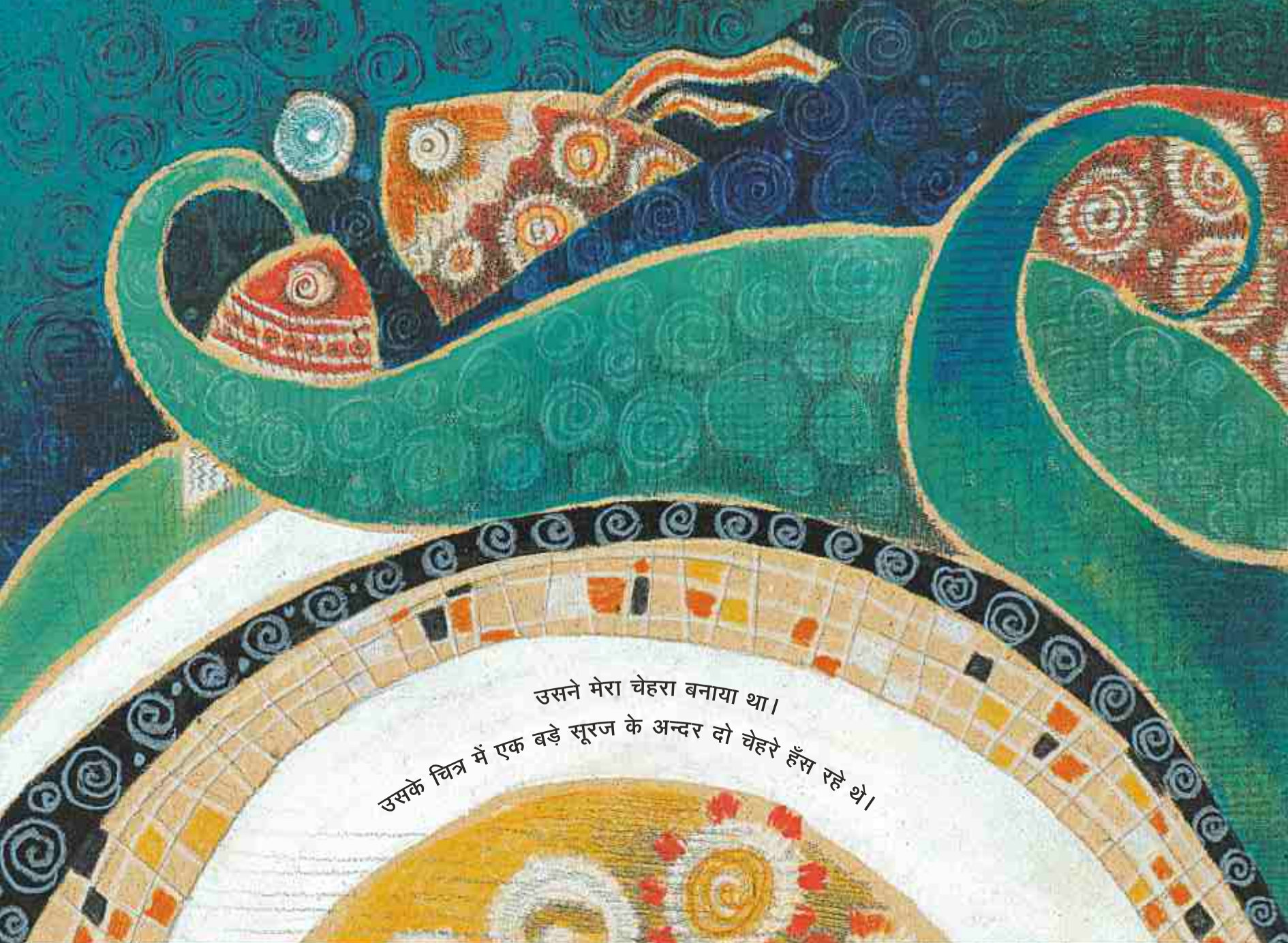
उसने मेरा चेहरा बनाया था।
उसके चित्र में एक बड़े सूरज के अन्दर दो चेहरे हँस रहे थे।

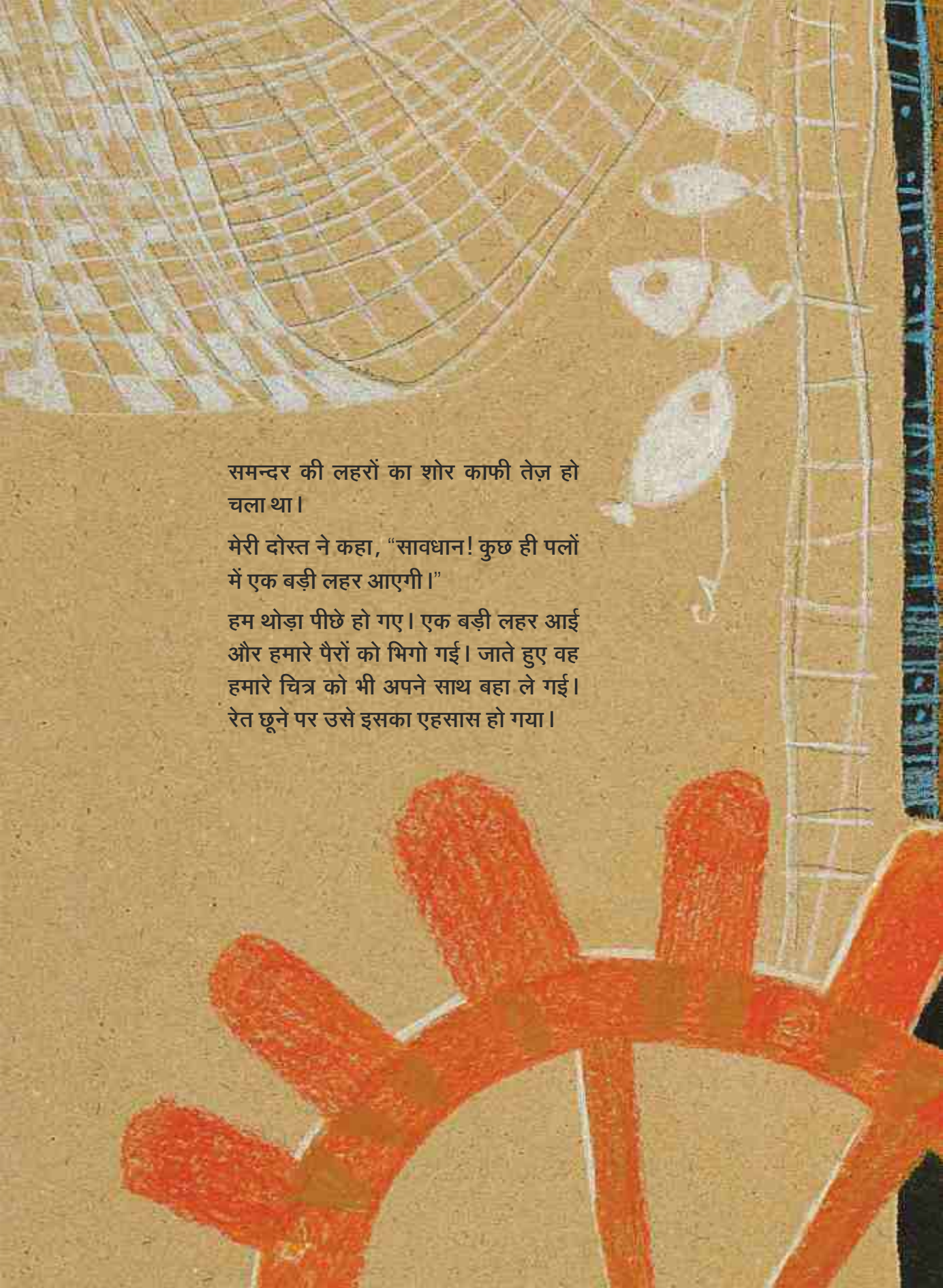

समन्दर की लहरों का शोर काफी तेज़ हो चला था।

मेरी दोस्त ने कहा, "सावधान! कुछ ही पलों में एक बड़ी लहर आएगी।"

हम थोड़ा पीछे हो गए। एक बड़ी लहर आई और हमारे पैरों को भिगो गई। जाते हुए वह हमारे चित्र को भी अपने साथ बहा ले गई। रेत छूने पर उसे इसका एहसास हो गया।

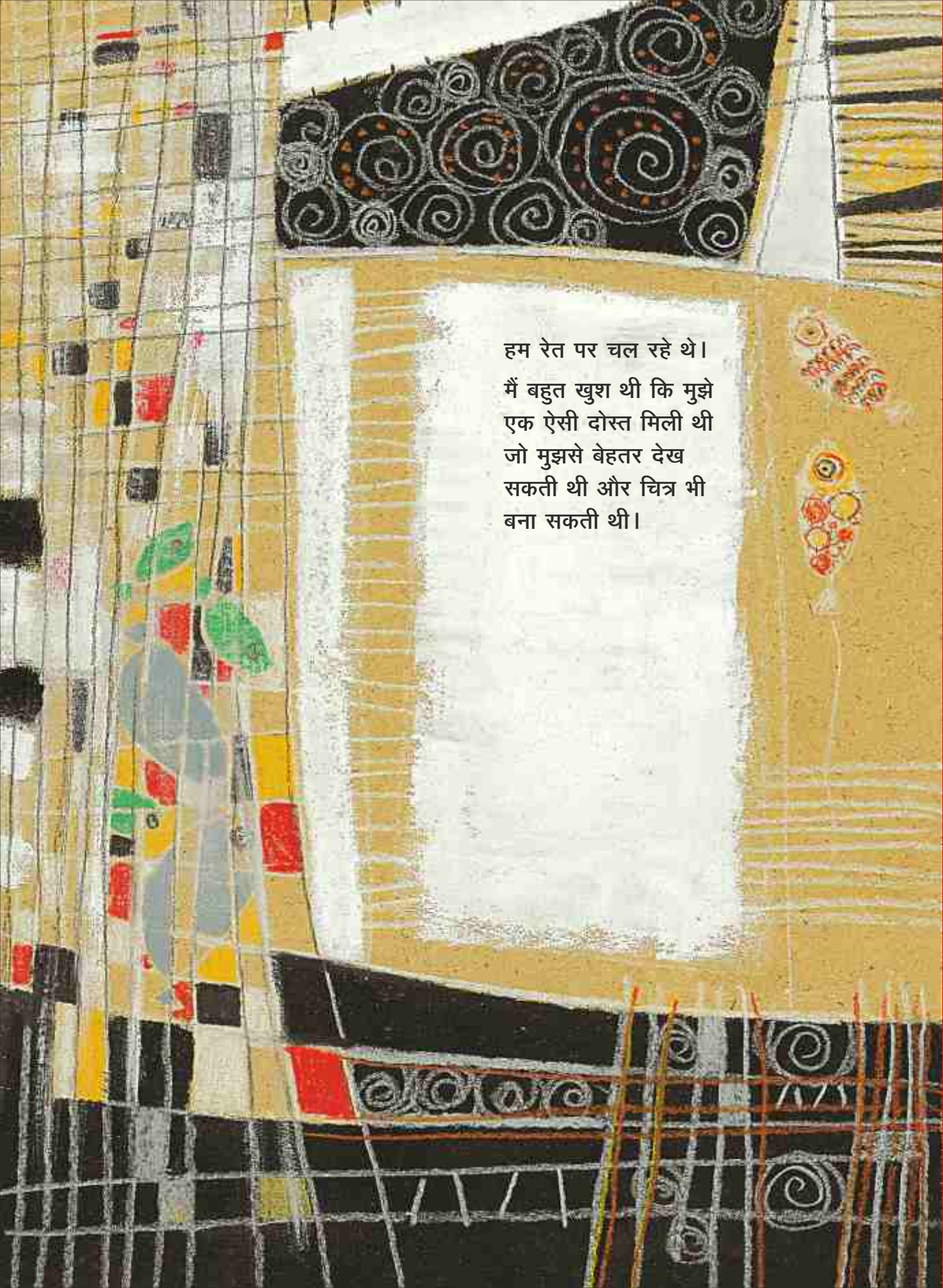

हम रेत पर चल रहे थे।

मैं बहुत खुश थी कि मुझे
एक ऐसी दोस्त मिली थी
जो मुझसे बेहतर देख
सकती थी और चित्र भी
बना सकती थी।

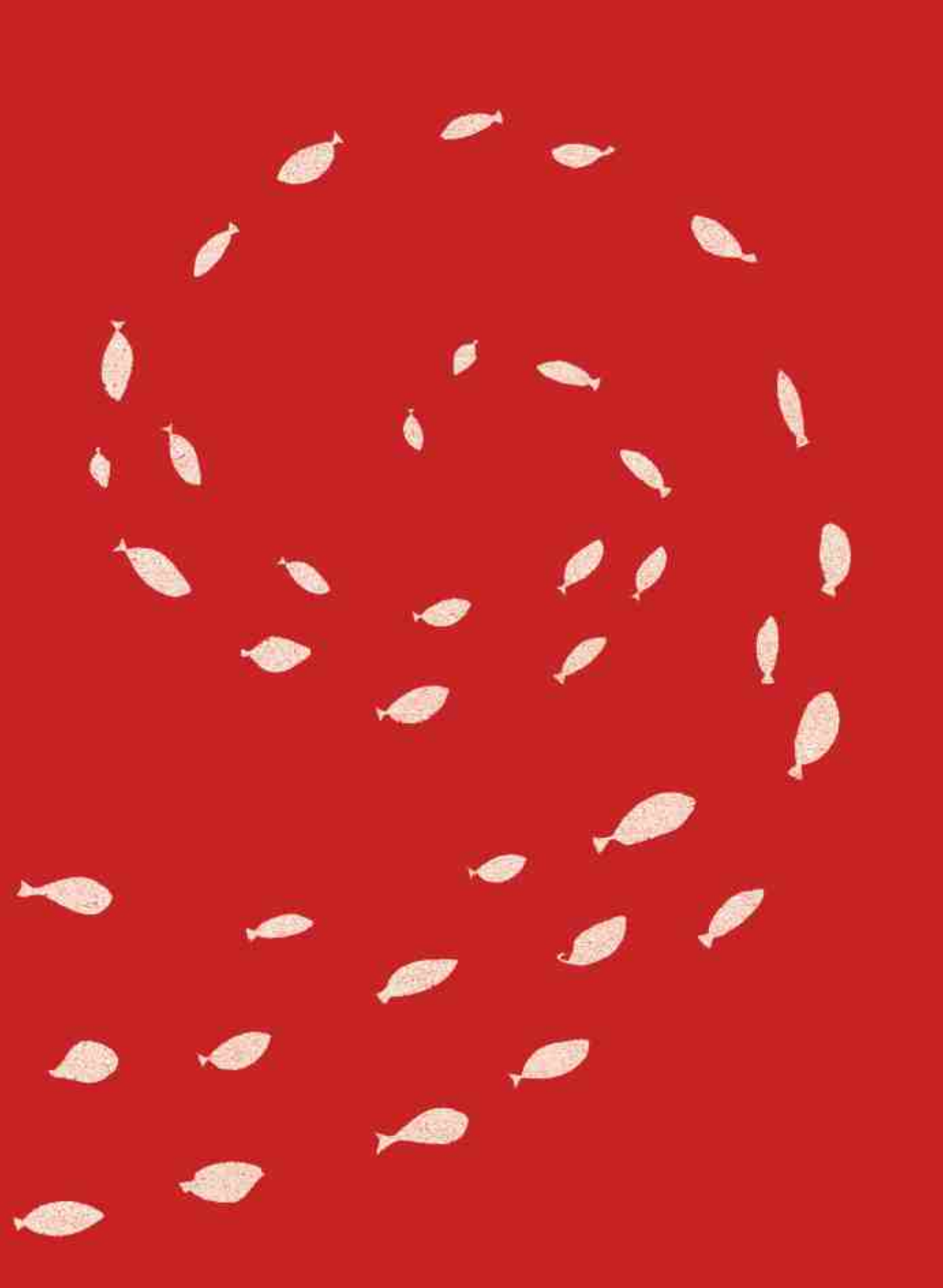

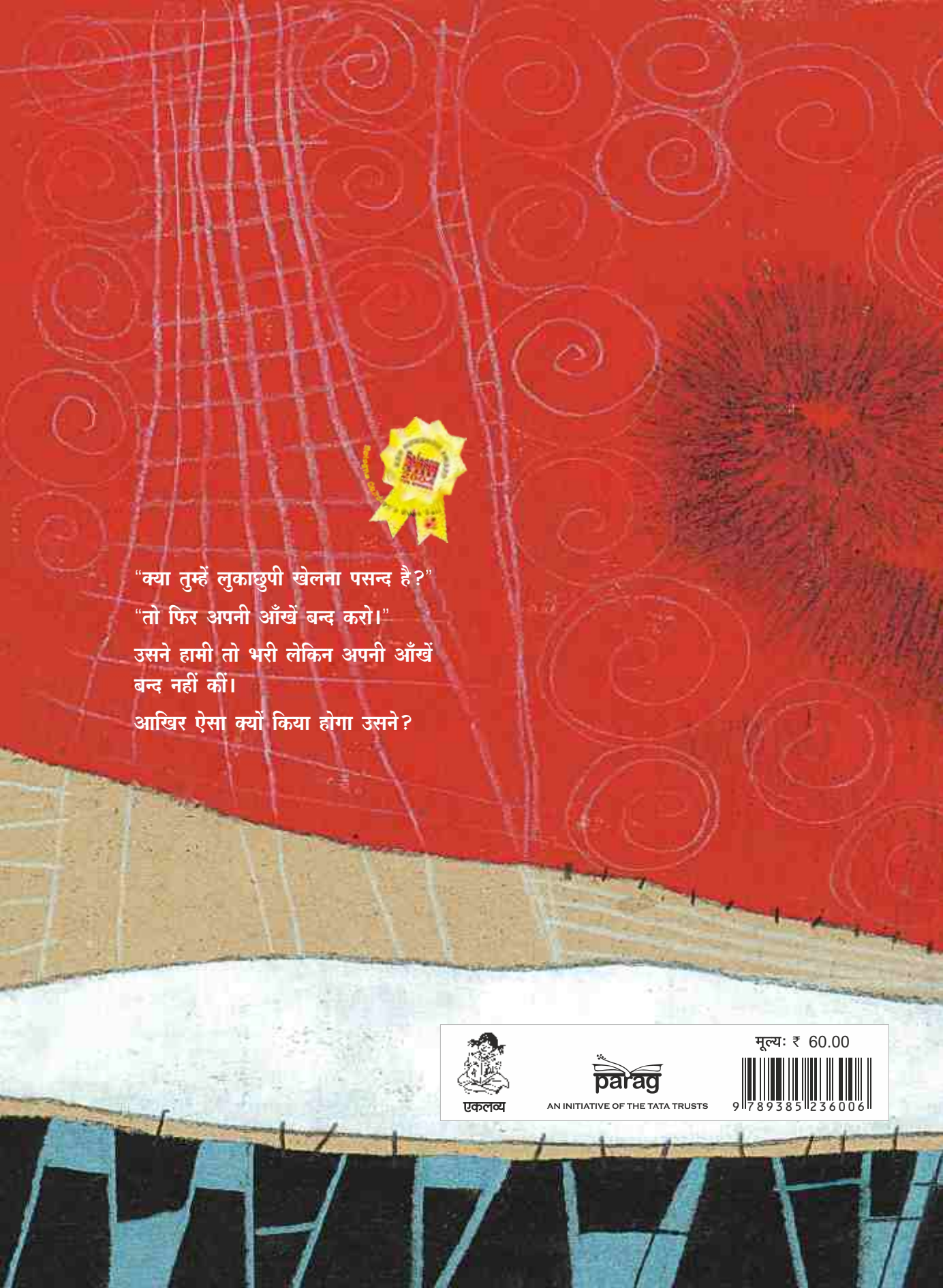

"क्या तुम्हें लुकाछुपी खेलना पसन्द है?"

"तो फिर अपनी आँखें बन्द करो।"

उसने हामी तो भरी लेकिन अपनी आँखें बन्द नहीं कीं।

आखिर ऐसा क्यों किया होगा उसने?

एकलव्य

parag
AN INITIATIVE OF THE TATA TRUSTS

मूल्यः ₹ 60.00

9789385236006